पेरिस
२३ दिसम्बर, २००५

संदेश संख्या– ८४

संत थॉमस के सूत्र
(यीशु के उद्‌गार)
(संदेश ८३ से आगे)

सूत्र–१२ : यीशु ने अपने शिष्यों से कहा –'' मेरी तुलना कर बताओ कि मैं किसके जैसा हूँ ।''

साइमन पीटर ने कहा–''आप एक सच्चे देवदूत की तरह हैं ।''

मैथ्यू ने कहा – ''आप एक प्रज्ञावान व्यक्ति की तरह हैं ।

थॉमस ने कहा – ''प्रभु, मेरे शब्द यह कहने में समर्थ नहीं हैं कि आप किसके जैसा हैं ।''

यीशु ने थॉमस से कहा – ''मैं तुम्हारा प्रभु नहीं क्योंकि तुम मेरे द्वारा खोजे गए शुद्ध झरने का रसपान कर मस्ती पा चुके हो ।'' उसके बाद वे उसे अलग ले गए और उससे तीन शब्द कहे ।

जब थॉमस लौटकर अपने सहचरों के पास आया तो उन्होंने उससे पूछा– ''यीशु ने तुमसे क्या कहा ?''

थॉमस ने कहा – ''उन्होंने जो शब्द मुझसे कहे हैं, उनमें से एक भी शब्द यदि मैंने बताया तो तुमलोग पत्थर उठाकर मुझ पर फेंकोगे, फिर उन पत्थरों से जो अग्नि निकलेगी वह तुमलोगों को जला देगी ।''

यीशु का भक्त या शिष्य होने का जो लोग दिखावा कर रहे थे, वे अपने मानसिक अनुबंधन के कारण चैतन्य (यीशु) की तुलना कभी किसी अमूर्त्त से तो कभी किसी दूसरे अमूर्त्त से करते हैं ।

किन्तु एक शरीर (थॉमस) चैतन्य का स्पर्श पा चुका है । वह विस्मय से पूर्ण है और इसीलिए वह भाषा एवं शब्दों की सीमाबद्धता के कारण उस परम चैतन्य के लिए कुछ भी नहीं कह सका । जैसा कि चैतन्य (यीशु) कहते हैं–''मैं तुम्हारा प्रभु नहीं ।'' यहाँ प्रभु और शिष्य एक हैं ।

इसके बाद चैतन्य ने जो तीन शब्द कहे वे शब्दों से परे हैं–''सत् (अस्तित्व) चित् (चैतन्य) और आनन्द ।''

ये शब्द विभेदकारी मन (पत्थर) के लिए कोई अर्थ नहीं रखते । किन्तु पत्थर में अग्नि अन्तर्निहित होती है । अतः यदि वे उसके बाद भी सुनना जारी रखते हैं तो वही अग्नि (जीवन) मन के अनुबंधन रूपी बोझ को जलाकर भस्म कर देती है ।

सूत्र–१३ : यीशु ने कहा–''तुम्हारा नेतृत्व करने वाले यदि तुमसे कहते हैं कि भगवान का राज्य स्वर्ग में है तब तो खगवृन्द (चिड़िया) वहाँ तुमसे पहले पहुँच जायेंगे। यदि वे तुमसे कहते हैं कि उनका राज्य समुद्र में है तो मछलियाँ वहाँ तुमसे पहले पहुँच जायेंगी ।''

''सत्य यह है कि वह राज्य (जीवन) तुम्हारे अन्दर है और वह तुम (मन) से परे हैं।''

''जब तुम स्वयं को जानोगे तब जीवन को जान पाओगे और तभी तुम जान पाओगे कि तुम सब शाश्वत पिता (चैतन्य) के पुत्र हो ।''

''जब तुम स्वयं को नहीं जानते तब तुम दीनता में होते हो क्योंकि तुम (मन) ही दीनता हो।''

यीशु (चैतन्य) कहते हैं–मन की दुष्प्रवृत्ति के प्रति सजग रहो क्योंकि यह उसी चीज के बारे में बताता है जिसके बारे में वह स्वयं कुछ नहीं जानता। वह केवल दूसरों से ली हुई उधार की बातों को ही बताता है । विश्वासों से मुक्ति ही ईश्वर का राज्य है और यह मुक्ति अन्दर और बाहर सर्वत्र है । जीवन के प्रति यह जागृति ही पुत्र और पिता का समन्वय है ।

किन्तु जब चैतन्य मन की महत्वाकांक्षाओं एवं कल्पनाओं से दबा होता है तब जीवन में केवल दीनता ही होती है अर्थात् केवल भ्रांति एवं विकृति होती है।

सूत्र–१४ : यीशु ने कहा–''वह मनुष्य धन्य है जिसने दुःख भोगा है और जीवन को पा लिया है ।''

''जब तक तुम जीवित हो, जीवन अर्थात् चैतन्य को देख लो अन्यथा मरणोपरान्त जीवन (चैतन्य) का दर्शन असम्भव है ।''

जुडिया जाने के रास्ते पर एक समारिटन को लोगों ने अपने कंधे पर एक भेड़ के बच्चे को ले जाते देखा ।

यीशु ने शिष्यों से पूछा–''यह व्यक्ति भेड़ के बच्चे को क्यों ढो रहा है?''

शिष्यों ने कहा–''ताकि वह उसे मार सके और खा सके ।''

यीशु ने उनसे कहा–''जब तक यह जीवित है, इसे नहीं खाया जा सकता। वह व्यक्ति उसे मारकर उसके मृत शरीर को खा सकेगा ।''

यीशु ने कहा–''तुमलोग भी अपनी सुरक्षा के लिए स्थान खोजते हो अन्यथा तुम सब भी मृत हो जाओगे और खा लिए जाओगे ।''

यीशु ने कहा–''एक बिस्तर पर दो आराम करेंगे । उनमें से एक समाप्त हो जायेगा और दूसरा जीवित रहेगा ।''

यहाँ चैतन्य (यीशु) उदघाटित करता है–जो दुःख मन से सम्बन्धित नहीं है, वह पवित्र है और उससे जीवन में करुणा का उदय होता है । मन के अन्धकार एवं अव्यवस्था के कारण ही जीवित प्राणियों में सामञ्जस्य एवं समन्वय का अभाव होता है । मन जीवन नहीं है । अतः जीवन के समन्वय, सामञ्जस्य एवं सन्तुलन के प्रति जागृत हो । मन का पोषण जीवन की हत्या है। मन के तुष्टीकरण में लगे रहना जीवन की कृपा से वंचित हो जाना है ।

दूसरों की अवधारणा एवं निष्कष रूपी 'शव का भक्षण' का अर्थ है–उन्हें सत्य मान लेना और यह जीवन की जीवन्तता की हत्या है। वास्तविक 'जीवन' तुम्ही हो, अतः स्वयं के प्रति जागो। मन के रूप में 'तुम' तथाकथित गुरुओं एवं महात्माओं द्वारा शोषित होओगे और समाप्त कर दिए जाओगे क्योंकि मन के रूप में तुम और कुछ नहीं बल्कि उधारी अवधारणा रूपी 'शव' ही हो ।

चैतन्य (यीशु) कहता है–विश्वास और अस्तित्व का आशीर्वाद एक साथ नहीं हो सकते। आनन्द को उपलब्ध होने के लिए विश्वास को मरना ही होगा।

सूत्र–१५ : यीशु ने कहा–''मैं सभी ज्योतियों में श्रेष्ठ हूँ, मैं ही सबकुछ हूँ। सभी कुछ मुझसे निःसृत है और सब मुझमें ही लय होता है।''

''लकड़ी का कोई टुकड़ा काटो या कोई पत्थर उठाओ, तुम मुझे सब में पाओगे।''

भगवद्गीता में भी यही कहा गया है –

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कम समाधिना ।।४।२४।।

ये सब चैतन्य ही हैं । जीवन सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है । यहाँ केवल और केवल जीवन है । इस जीवन को मन (मृत्यु) द्वारा निर्मित उत्पादों में धारण नहीं किया जा सकता । जीवन सर्वत्र है । अतः उसे केवल मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर और ध्यान केन्द्रों में मत खोजो ।

सूत्र–१६ : यीशु कहते हैं–''जो भी मेरे पास है, वह अग्नि के पास है और जो मुझसे दूर है, वह मेरे राज्य से भी दूर है ।''

यीशु–''मेरे शरणागत हो जाओ क्योंकि मेरा शासन सरल है और मेरा प्रभुत्व सहज है ।''

यीशु–''जो भी मेरे मुँह से पीता है, वह मेरे जैसा बन जाएगा और मैं उसके जैसा बन जाऊँगा और तब उसके लिए प्रछन्न चीजें भी प्रकाशित हो जाती हैं ।''

चैतन्य, 'जो है'–उसे देखने की ज्वाला है, रुद्राक्ष है । चैतन्य सरल, सहज और प्रयत्नरहित है अर्थात् अनायास है । यहाँ प्रयत्न शैथिल्य का ही प्रभुत्व है और योग शासन है ।

अच्छाई तो अच्छा है किन्तु 'और अधिक अच्छा'–अच्छाई का शत्रु है क्योंकि यह अशि और अभद्र है । चैतन्य को उपलब्ध शरीर के जीवन्त होठों से निःसृत वाणी को सुनकर सचेतनता को उपलब्ध हो जाओ। तभी तुम्हारा शरीर भी चैतन्य के प्रकाश से प्रकाशित हो सकता है और तब दिव्यता के अवतरण के लिए गुरु और शिष्य के बीच की द्वैतता समाप्त हो जाती है और तभी प्रछन्न परमपवित्र प्रकट हो जाता है ।

सूत्र–१७ : यीशु–''जो एकाकी है और भगवत्ता द्वारा चयनित है, वह धन्य है क्योंकि उसे ही ईश्वर का राज्य प्राप्त होता है । वह इसलिए भी धन्य है क्योंकि वह वहीं से आता है और पुनः वहीं चला जाएगा ।''

यीशु–''यदि वे तुमसे पूछते हैं, ''तुम्हारी उत्पत्ति कहाँ से हुई'' तो तुम उन्हें बताना कि तुम्हारी उत्पत्ति प्रकाश से हुई है और प्रकाश स्वयं से ही उत्पन्न होता है ।''

यीशु–यदि वे तुमसे पूछते हैं, ''तुम्हारे अन्दर पिता का कौन–सा चिह्न विद्यमान है ?'' तब तुम उनसे कहना–''गतिशीलता और स्थिरता।''

चैतन्य (यीशु) कहता है – जो एकाकीपन (वियुक्तता नहीं, सर्व–युक्तता) में होता है वह परमानन्द में होता है । तब उसे सर्वव्यापक चैतन्य लीला हेतु चयनित करता है । और तब वह ईश्वर के राज्य (चैतन्य) में प्रवेश करता है जो कि सभी चीजों का मूल–स्रोत है । यही प्रकाश है, यही भगवत्ता है जो स्वयं से ही प्रकट होता है । सृष्टि ही स्रष्टा है । ये दोनों भिन्न नहीं हैं । मानसिक एवं सांसारिक तल पर हमेशा ही दो होता है किन्तु जीवन और ब्रह्माण्ड का सत्य ''अद्वैत'' है। मानसिक तल पर द्वैत से मुक्ति सबसे बड़ा प्रबोध है । प्रकृति में विभिन्नता है परन्तु वह द्वैत की पुष्टि नहीं करता ।

मन–निर्मित एवं पदार्थों से निर्मित ईश्वर का अस्तित्व नहीं होता । ऐसा ईश्वर और कुछ नहीं बल्कि मन का परम

लोभ एवं उसका तुष्टीकरण है। स्वर्ग–राज्य का कोई अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक नहीं होता जो किसी विशिष्ट धार्मिक विश्वास पद्धति के अनुसार पुरस्कार और दण्ड प्रदान करता है और अपराधबोधग्रस्तता के द्वारा मनुष्य में उपलब्ध परम पवित्र चैतन्य को प्रदूषित करता है । सम्पूर्ण पृथ्वी पर यह कुकृत्य पुरोहितों एवं राजनीतिज्ञों द्वारा किया जा रहा है । इसीलिए यीशु कहते हैं – भगवत्ता के परमानन्द में होने के लिए 'भगवान' पर विश्वास मत करो । केवल यीशु ही ईश्वर–पुत्र नहीं हैं । सृष्टि ही पिता है और सृष्टि ही पुत्र भी । दिव्य चैतन्य परम गतिशील है और साथ ही शाश्वत रूप से स्थिर भी । यह जीवों में गतिशीलता और स्थिरता के रूप में परिलक्षित होता है ।

सूत्र–१८ : साइमन पीटर ने उनसे कहा–''माँ मरियम'' को हमलोगों के बीच से निकाल दिया जाय क्योंकि औरतें जीवन के योग्य नहीं हैं ।''

यीशु ने कहा – ''देखो, तब मैं उनका नेतृत्व करूँगा ताकि मैं उन्हें पुरुष बना सकूँ और तब वे तुम पुरूषों के जैसा ही जीवित आत्मा बन सकेंगी।''

''क्योंकि प्रत्येक वह स्त्री जो स्वयं को पुरूष बना लेती है, ईश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकेगी ।''

साइमन पीटर जड़–बुद्धि है । वह शक्ति (माता) को बाहर जाने के लिए कहता है । लेकिन चिति (पिता) कहता है–जो शक्ति, चिति से युक्त है वही चितिशक्ति है, वही चैतन्य है । वहाँ कोई द्वैत नहीं है । यह पूर्णता ही चैतन्य है।

सूत्र–१९ : यीशु कहते हैं – ''एक व्यक्ति के यहाँ कुछ अतिथि आये थे। जब उसने भोजन बना लिया तब अपने नौकर को अतिथियों को भोजन पर बुलाने के लिए भेजा ।

नौकर एक अतिथि के पास गया और कहा – ''मेरे स्वामी ने आपको भोजन के लिए बुलाया है।'' तब उसने कहा – ''मेरा कुछ सौदागरों के यहाँ बकाया है । वे शाम को मेरे पास आयेंगे । मैं उनसे मिलूँगा तथा उन्हें पैसा देने का अपना आदेश दूँगा। इसलिए मैं रात्रि भोजन से माफी चाहता हूँ।''

वह दूसरे अतिथि के पास गया और उससे कहा–'' मेरे स्वामी ने आपको भोजन के लिए बुलाया है ।'' उसने उत्तर दिया – ''मैंने एक मकान खरीदा है और घर के लोगों ने मुझे वहाँ रुकने का अनुरोध किया है । अतः मेरे पास समय नहीं है।''

वह अन्य अतिथि के पास गया और बोला–''मेरे स्वामी ने आपको भोजन पर बुलाया है।'' उसने उत्तर दिया–''मेरे मित्र की शादी है और मुझे रात्रि–भोज की व्यवस्था करनी है। मैं आने में असमर्थ हूँ। अतः रात्रि–भोज से माफी चाहता हूँ ।''

वह चौथे अतिथि के पास जाकर बोला–''मेरे स्वामी आपको भोजन के लिए बुला रहे हैं ।'' उसने उत्तर दिया–''मैंने जमीन खरीदी है और मुझे किराया लेने जाना है । इसलिए मैं आने में असमर्थ हूँ और माफी चाहता हूँ।''

नौकर लौटकर आया और अपने स्वामी से कहा–''जिन्हें आपने रात्रि–भोजन के लिए बुलाया था, वे सभी माफी चाहते हैं ।''

तब स्वामी ने नौकर को कहा–''सड़क पर जाओ और वहाँ जो भी मिले, उन्हें बुलाओ ताकि वे भोजन कर सकें । व्यापारी और सौदागर मेरे पिता के धाम में प्रवेश नहीं कर सकते ।''

यीशु (चैतन्य) यहाँ सांसारिकता की असारता एवं इसमें चैतन्य के अभाव की ओर इंगित करते हैं और साथ ही रिक्तता एवं निर्दोषता की पवित्रता की ओर भी संकेत करते हैं । यह निर्दोषता ही सौन्दर्य है और इसी को अन्तर्दृष्टि तथा चैतन्य का आमन्त्रण मिलता है।

सूत्र–२० : शिष्यों ने उनसे पूछा–''मृतलोगों की चिर–निद्रा कब समाप्त होगी और नयी सृष्टि कब होगी ?''

यीशु ने उत्तर दिया–''जिस घटना की तुम आशा करते हो वह पहले ही घट चुकी है परन्तु तुम उसे जानते नहीं ।''

उनके शिष्यों ने कहा–''चौबीस पैगम्बरों ने इजराइल में केवल आपके बारे में ही बताया है ।''

यीशु ने कहा–''जो तुम्हारे समक्ष जीवित है उसकी बातों को अस्वीकार कर तुमलोग मृत पैगम्बरों की बात करते हो ।''

यीशु ने पुनः कहा–''मैंने संसार में आग फेंकी है और मैं संसार की तब तक रक्षा करता रहूँगा जब तक यह पूर्णतया जल न जाय ।''

व्यक्ति 'जो वह है' को अस्वीकार कर 'जो वह नहीं है', वह बनने के पाखण्ड में जीवन की पवित्रता न कर रहा है । पूर्वानुमान के चक्कर में चैतन्य खो रहा है। सुखानुभूति का भ्रम आनन्दमय–अस्तित्व के बोध में बाधक है । आशा एवं अपेक्षा के चक्कर में अस्तित्वमय–ऊर्जा समाप्त हो रही है ।

उपदेशों को स्मरण करना और उन्हें जीवन में उतारना, दो अलग बाते हैं। केवल स्मरण करने मात्र से उन्हें जीवन में उतारना सम्भव नहीं।

जीवित गुरु के शरीर में उपलब्ध समझदारी की अपेक्षा विवेकहीन मन को मृत पैगम्बरों की बातें अधिक महत्वपूर्ण लगती हैं ।

चैतन्य (यीशु) यह सुनिश्चित करता है कि सत्य को उपलब्ध मानव–शरीर को संसार गुरु या स्वामी माने या न माने, उसके वचनों की ज्वाला का विस्फोट होता ही रहता है और यह तब तक जारी रहेगा जब तक मानव–चेतना का द्वैत समाप्त नहीं होता और पुरोहितों–राजनीतिज्ञों के निर्देशन में चल रहे मरने–मारने की संस्कृति से मुक्त नयी दिव्य चेतना का उदय नहीं होता।

सूत्र–२१ : यीशु ने कहा–''तुम्हारे अन्दर जो है, उसे यदि तुमने प्रकट होने दिया तो वह तुम्हारी रक्षा करेगा।''

''तुम्हारे अन्दर जो है, उसके प्रति यदि तुम जागृत नहीं हो पाते तो जो तुम नहीं हो, वही तुम्हारी हत्या कर देगा।''

यीशु ने कहा–''जो खोजी है उसे मत रोको जब तक उसकी खोज पूर्ण न हो जाय ।''

''और जब उसे वह प्राप्त हो जायेगा तब वह कठिनाई में होगा परन्तु उसके बाद वह दिव्य हो जायेगा और सबके ऊपर शासन करेगा ।''

उसके बाद उन्होंने कहा–''जो भी इन शब्दों का अर्थ समझ जायेगा वह मृत्यु का अतिक्रमण कर जाएगा ।''

चैतन्य कहता है कि स्वर्ग में कोई उद्धारक नहीं बैठा है जो माफिया–नेता की तरह कार्य करता हुआ केवल चर्च जाने वाले ईसाइयों का ही उद्धार करता है। तथाकथित रुप से उद्धारक कहलाने वाले ईसाई नहीं थे, उनके 'अनुयायी' ईसाई कहलाते हैं । सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्रपति और पवित्र–पोप के नेतृत्व में ये ईसाई शायद नरक जाने को प्रतिबद्ध हैं क्योंकि इन्हीं के नेतृत्व में लाखों गैर – ईसाई लोगों को पृथ्वी के शुद्धिकरण के नाम पर कत्ल कर दिया गया। यीशु को सचमुच ही इन ईसाइयों के उद्धार का बहुत कठिन काम करना होगा । इसीलिए यीशु कहते हैं–जो तुम्हारा उद्धार करेगा वह तुम्हारे अन्दर ही है अर्थात् मन के उद्धार के लिए चैतन्य शरीर के अन्दर ही विद्यमान है ।

ईश्वर के लिये जागो । यदि तुम जागृत नहीं होगे तो चैतन्य का प्रत्यक्ष बोध नहीं होगा और चैतन्य के अभाव में जीवन ही खो जायेगा ।

चैतन्य (यीशु) कहता है कि मन और उसकी चालबाजी के साथ समझौता मत करो ।

लेकिन जब तुम मन की चालवाजियों के प्रति जागृत हो जाओगे तब तुम कठिनाई में पड़ जाओगे क्योंकि तब मन तुम्हें सूली पर चढ़ा देगा ।

लेकिन अन्ततोगत्वा चैतन्य के रूप में तुम दिव्य हो जाओगे और सर्वशक्तिमान के रूप में सर्वत्र विद्यमान होगे ।

यीशु (चैतन्य) कहते हैं कि जो भी इन उद्‌गारों को समझ जाएगा वह जन्म–मरण के चक्र से मुक्त हो जाएगा और मर्त्य होते हुए भी अमरत्व को उपलब्ध हो जाएगा ।

सभी क्रियावान एवं समस्त मानवता के लिए
क्रिसमस का पर्व एवं नववर्ष मंगलमय हो ।